बिहार विधान सभा वादवृत्त।

सोमवार, तिथि ३ सितम्बर, १९५१।

भारत के संविधान के उपबन्ध के अनुसार एकत्र विधान सभा का कार्य विवरण।

सभा का अधिवेशन पटने के राज्यपाल भवन, सोमवार, तिथि ३ सितम्बर, १९५१ को अपराह्न १ १/२ बजे माननीय अध्यक्ष श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद वर्म्मा के सभापतित्व में हुआ।

तारांकित प्रश्नोत्तर।

STARRED QUESTIONS AND ANSWERS

बिहार के कोटे का कपड़ा लेने के लिये एजेण्ट।

A*५१। श्री जयनारायण 'विनीत'—क्या माननीय मंत्री, पूर्त्ति एवं मूल्य नियंत्रण विभाग, यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(क) क्या बिहार के लिये मिलों से बिहार के कोटे के कपड़े लेने के लिये कोई एजेण्ट हैं;

(ख) यदि खंड (क) का उत्तर 'हां' है तो क्या वे केन्द्रीय क्लौथ कंट्रोलर के समक्ष बिहार में खपने वाले कपड़ों का ठीक-ठीक चित्रण कर बिहार के लिये अधिक से अधिक पोपुलर कपड़े लेने का यत्न करते हैं;

(ग) क्या तथाकथित एजेण्ट साहब बिहारी हैं;

(घ) उक्त एजेण्ट की नियुक्ति के नियम (क्राटेरीअन) क्या-क्या रखे गये हैं?

श्री वीरचन्द्र पटेल—(क) उत्तर 'ना' है।

(ख), (ग) और (घ) प्रश्न नहीं उठता है।

श्री जयनारायण 'विनीत'—अगर कोई एजेण्ट नहीं है तो बिहार का कोटा कैसे आता है?

श्री वीरचन्द्र पटेल—जितने इम्पोर्टर्स हैं, उनका अपना-अपना कमीशन एजेण्ट्स, बम्बई और अहमदाबाद में रहते हैं। उन एजेण्टों को ऑर्डर देकर वहां से कपड़े मंगाये जाते हैं। गवर्नमेंट के तरफ से टेक्स्टाइल कमिश्नर के पास फीगर्स चले जाते हैं कि किस इम्पोर्टर को कितना एलौट हुआ है। गवर्नमेंट के तरफ से कोई एजेण्ट बम्बई और अहमदाबाद में नहीं है।

A—Postponed from the 28th August 1951.

श्री जगन्नाथ सिंह—जहां तक हमको याद है गवर्नमेंट के तरफ से कहा गया था एक प्रेस स्टेटमेंट में, कि वहां कोई पदाधिकारी रहते हैं। मैं जानना चाहता हूं कि कोई पदाधिकारी रहते हैं या नहीं?

श्री वीरचन्द्र पटेल—कोई ऑफिसर या पदाधिकारी नहीं रहते हैं।

श्री अर्जुन प्रसाद मिश्र—तो क्या श्री परमानन्द केजरीवाल, जो कि मुजफ्फरपुर में रहते हैं, सरकार के एजेण्ट थे या नहीं?

श्री वीरचन्द्र पटेल—वे न सरकार के एजेण्ट थे और न हैं।

माननीय अध्यक्ष—यह प्रश्न नहीं उठता है।

श्री अर्जुन प्रसाद मिश्र—तो कोटा के मुताबिक इम्पोर्टस उनको उठाते हैं कि नहीं, यह जानने के लिये सरकार का क्या जरिया है?

माननीय अध्यक्ष—इसका जवाब श्री "विनीत" जी के प्रश्न के जवाब में दिया गया है।

श्री अर्जुन प्रसाद मिश्र—जो कोटा यहां के लिये निर्धारित है, वह ठीक रूप से उठाया गया या नहीं, यह कैसे जान सकते हैं?

माननीय अध्यक्ष—इसका जवाब दे दिया गया है कि कमीशन एजेण्ट हैं।

सरदार हरिहर सिंह—क्या यह बात गलत है कि परमानन्द केजरीवाल और सत्य-नारायण सरावगी सरकार के एजेण्ट हैं?

श्री वीरचन्द्र पटेल—यह बात बिल्कुल गलत है।

सरदार हरिहर सिंह—वे सरकार के किस अधिकारी के रूप में वहां काम करते हैं?

माननीय अध्यक्ष—यह प्रश्न नहीं उठता है।

ALLOTMENT OF SEATS OF MEDICAL COLLEGE HOSTEL, DARBHANGA.

A*57. **Shri RAMASIS THAKUR**: Will the Hon'ble Minister in charge of the Local Self-Government be pleased to state—

(*a*) whether it is a fact that number of seats in the Hostel of Darbhanga Medical College although lying vacant, are not being allotted to the Batch 'F' students condensed M.B., B.S. course;

(*b*) whether it is a fact that most of the vacant seats have been kept reserved for the first year students of the regular batch;

(*c*) whether it is a fact that some vacant seats have been allotted to refugee students and nominees of the Government of India;

(*d*) if the answer to clauses (*a*) to (*c*) be in the affirmative, what are the reasons for this preferential treatment towards the section of students mentioned in clauses (*b*) and (*c*) and what steps Government propose to take to accommodate the large number of students of Batch 'F' of the condensed M.B., B.S. course ?

The Hon'ble **PANDIT BINODANAND JHA** : (*a*) The answer is in the negative. No seat in the Darbhanga Medical College Hostel is lying vacant. All seats have been filled up by the 1st, 2nd, 3rd and 4th year students of the regular course and the students of the condensed course including students of 'F' batch.

(*b*) and (*c*) The answer is in the affirmative.

(*d*) The reasons for the preference are obvious. First year students are generally new comers and they and refugees and those who have come from outside have greater difficulty in finding living accommodation than others.

श्री रामाशीष ठाकुर—जो फर्स्ट इयर स्टूडेन्ट्स आते हैं और जो कन्डेन्स्ड कोर्स के लिए आते हैं दोनों की विक्कत बराबर होने पर भी क्यों फर्स्ट इयर स्टूडेन्ट्स को प्रिफेरेन्स दिया जाता है ?

माननीय पंडित विनोदानन्द झा—जो कन्डेन्स्ड कोर्स के लिए आते हैं वे इसी स्कूल में ५ वर्ष पढ़ चुके हैं और उस स्थान से परिचित हैं। कॉलेज के फर्स्ट इयर में जो आते हैं वे पहला मर्तबा वहां जाते हैं। तो जगह की कमी रहने के कारण यदि दोनों में चुनना पड़े तो मैं समझता हूं कि फर्स्ट इयर स्टूडेन्ट्स को पहला मौका देना चाहिए।

श्री रामाशीष ठाकुर—कन्डेन्स्ड कोर्स के "एफ" बैच के स्टूडेन्ट्स की भर्ती अप्रील महीने में हुई है, तो कैसे वे इस स्थान से परिचित हैं ?

माननीय पंडित विनोदानन्द झा—यदि सभी स्टूडेन्ट्स के लिए समुचित स्थान न मिल सका तो मैं समझता हूं कि यह अत्यावश्यक है कि फर्स्ट इयर स्टूडेन्ट्स और गवर्नमेंट ऑफ इन्डिया के भेजे हुए रिफ्यूजी-स्टूडेन्ट्स को पहले स्थान मिलना चाहिए।

श्री झूलन सिंह—क्या यह सम्भव नहीं है कि जितने स्टूडेन्ट्स आते हैं—फर्स्ट इयर में या कन्डेन्स्ड कोर्स में—सबों को स्थान मिल सके ?

माननीय पंडित विनोदानन्द झा—आप जानते हैं कि कन्डेन्स्ड कोर्स सिर्फ दो वर्ष के लिए है और ऐसी परिस्थिति में सिर्फ दो वर्ष के लिए इतना छात्रावास बनाना बुद्धिमानी का काम नहीं हो सकता है।

श्री झूलन सिंह—क्या इसके लिए कोई दूसरा उपाय नहीं है ?

माननीय पंडित विनोदानन्द झा—यह प्रश्न कॉलेज होस्टेल के बारे में है। मगर आपके इनफोर्मेशन के लिए मैं कह देता हूं कि होस्टेल के अलावे प्राइवेट मकानात भी लिए जा रहे हैं।

श्री अर्जुन प्रसाद मिश्र—क्या सरकार के सामने विद्यार्थियों के लिये काफी छात्रावास बनाने की कोई योजना है ?

माननीय पंडित विनोदानन्द झा—दरभंगा कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए काफी छात्रावास बनाने की योजना कार्यान्वित की जा रही है और यह हो जाने पर काफी जगह मिल जायगी।

श्री अर्जुन प्रसाद मिश्र—जो साल भर के लिए कन्डेन्स्ड कोर्स में आया है वह कहां रहेगा?

माननीय पंडित विनोदानन्द झा—जो "एफ" बेंच में हैं उनको छात्रावास के अलावे प्राइवेट मकान में भी जगह मिली है।

आयुर्वेद रिसर्च विभाग पर खर्च।

*८४। श्री जयनारायण 'विनीत'—क्या माननीय मंत्री, स्थानीय स्वायत्त-शासन विभाग, यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(क) वर्तमान मंत्रिमण्डल के शासन काल में अब तक आयुर्वेद के रिसर्च विभाग पर कुल कितने रुपये खर्च किये गये हैं तथा कितने लोग इसमें लगे हुए हैं;

(ख) इस विभाग की ओर से आयुर्वेदिक जगत में अब तक कितने आविष्कार रिसर्च किये जा सके हैं;

(ग) उन आविष्कृत वस्तुओं के नाम तथा उपयोग, आयुर्वेदिक चिकित्सा के विकास और विस्तार की दिशा में क्या-क्या कार्रवाइयां की गई हैं?

माननीय पंडित विनोदानन्द झा—(क), (ख) और (ग) केन्द्रीय सरकार पंडित कमिटी की रिपोर्ट पर रिसर्च विभाग खोलने का विचार कर रही है। प्रान्त में इस प्रकार की योजना नहीं है।

श्री जगन्नाथ सिंह—प्रान्तीय सरकार की तरफ से कोई व्यवस्था क्यों नहीं है?

माननीय पंडित विनोदानन्द झा—चोपरा कमिटी ने बतलाया है कि आयुर्वेद के सम्बन्ध में रिसर्च का काम केन्द्रीय सरकार की तरफ से होना चाहिये, नहीं तो यूनिफॉरमिटी नहीं रहेगी। इस सम्बन्ध में सिलेबस और योजना केन्द्रीय सरकार की तरफ से बनायी जाती है इसलिये कि हर प्रान्त को अपने-अपने ढंग से बनाने का मौका न मिले।

धातु विद्या (मिड-वाइफरी) प्रशिक्षण योजना।

*८५। श्री जयनारायण 'विनीत'—क्या माननीय मंत्री, स्थानीय स्वायत्त-शासन विभाग, यह बताने की कृपा करेंगे कि—

(क) धातु विद्या प्रशिक्षण योजना (मिड-वाइफरी ट्रेनिंग स्कीम) के अन्तर्गत अब तक कितने लोगों को ट्रेनिंग दी जा चुकी है;